साहित्य अकादेमी के "लेखक से भेंट" कार्यक्रम में
वरिष्ठ कवि चन्द्रकान्त देवताले से रूबरू हुए साहित्य रसिक

साहित्य अकादेमी , नई दिल्ली द्वारा दिनांक 19 जून 2016 दिन रविवार शाम 5 बजे आयोजित लेखक से भेंट कार्यक्रम के अंतर्गत वरिष्ठ कवि चन्द्रकान्त देवताले का व्याख्यान और काव्य पाठ हिन्दी अध्ययनशाला , विक्रम विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ। श्री देवताले ने अपने व्याख्यान में कहा कि कविता करना जोखिम का काम है। अपनी आत्मा की शांति भंग करके ही कवि बना जा सकता है। कवि होना नैतिक सजा है। उन्होंने कहा कि मेरी जड़ें गाँव में है। मेरे अंदर के कवि की चिंताएँ एक आदिवासी की सी चिंताएँ हैं। कवि के भीतर एक बच्चा और एक स्त्री होती है। मेरे लिए कवि होने और मनुष्य होने में कोई फर्क नहीं है। वर्तमान भूमंडलीकरण का दौर संवेदना का दुश्मन है। हमने राजनीतिक लोकतन्त्र बनाया है, किन्तु हम अभी तक सामाजिक लोकतन्त्र नहीं बना पाए हैं। विज्ञान जो कभी सेवक था, आज उसे हमने भगवान बना दिया, यह अफसोसजनक है।

श्री देवताले ने अपनी अनेक प्रभावी कविताओं से साहित्य रसिकों और विद्यार्थियों को आह्लादित किया। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रमुख कविताओं में - *एक नींबू के पीछे, मेरी पोशाख ही ऐसी थी, इधर मत आना, कैसा पानी कैसी हवा , नींबू मांगकर, अगर तुम्हें नींद नहीं आ रही, स्मिता पाटिल के लिए , दो लड़कियों का पिता होने से , थोबड़ा पोथी, प्रतीक्षा करो तुम कतार में हो* आदि ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रारम्भ में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने श्री देवताले की कविताओं के वैशिष्ट्य के विषय में अपना वक्तव्य दिया । उन्होंने श्री देवताले की कविताओं में जीवंत संयुक्त परिवार को भारतीय साहित्य की विशेषता के रूप में रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि देवताले जी की शुरुवाती कविताओं पर लिखते हुए मैंने लक्ष्य किया था कि स्त्री , बच्चों और परिवार के प्रति उनके भीतर उत्कट संवेदना है और आज जब देवताले जी का साहित्य गरिमा प्राप्त कर चुका है तब यह देखना मेरे लिए सुखद है कि वह विशेषता देवताले जी की कविताओं की मुख्य आवाज़ और स्रोत बनी हुई है.

साहित्य अकादेमी द्वारा चन्द्रकान्त देवताले पर केन्द्रित ब्रोशर का लोकार्पण साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथप्रसाद तिवारी एवं कवि श्री देवताले ने किया।
अतिथियों ने प्रारम्भ में विश्व हिन्दी संग्रहालय एवं श्री देवताले की चुनिन्दा कविताओं और उनके जीवन और व्यक्तित्व पर केन्द्रित कविताओं की प्रदर्शनी का अवलोकन किया।
संचालन एवं आभार प्रदर्शन साहित्य अकादेमी , नई दिल्ली के सम्पादक कुमार अनुपम ने किया।